अध्याय

02

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई, पग घुँघरू बाधि मीरां नाची

© JCERT not to be republished

मीराबाई

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

जीवन परिचय

जन्म – 1498 कुड़की ग्राम, मेड़ता, राजस्थान

पिता – रतन सिंह

माता – वीरकुमारी

गुरु – संत रैदास

पति – राणा सांगा के पुत्र भोजराज

मृत्यु – 1557, द्वारका

रचनाएं – मीरा पदावली, नरसीजी-रो-मायरो, गीत गोविन्द टीका, सग गोविन्द और राज सोरठा के पद।

इसमें हिमालय की प्राकृतिक सुंदरता का मनोरम चित्रण हुआ है।

इसमें हिमालय की बर्फीली घाटियों, झीलों, झरनों तथा देवदार के जंगलों की सुंदरता का मनोरम चित्रण हुआ है।

मीरा की माता ने बचपन में श्री कृष्ण को उनका पति बता दिया था उसके बाद वे श्रीकृष्ण को ही अपना पति और आराध्य मानने लगी और इसी वजह से उनके मन में बचपन से ही कृष्ण भक्ति की भावना जन्म ले चुकी थी।

पति की मृत्यु के बाद वे पूरी तरह से साधु-संतों के साथ भजन -कीर्तन करने लगी।

इन्होंने देश में दूर-दूर तक यात्राएँ कीं। चित्तौड़ राजघराने में अनेक कष्ट उठाने के बाद ये वापस मेड़ता आ गई। यहाँ से उन्होंने कृष्ण की लीला भूमि वृंदावन की यात्रा की। जीवन के अंतिम दिनों में वे द्वारका चली गई।

माना जाता है कि वहीं रणछोड़ दास जी की मंदिर की मूर्ति में वे समाहित हो गई। इनका देहावसान 1546 ई. में माना जाता है। उनकी जन्म तिथि एवं निधन के बारे में विद्वानों में मतभेद है।

© JCERT not to be republished

साहित्यिक परिचय

मीराबाई सगुण भक्ति कृष्ण काव्य धारा की श्रेष्ठ कवयित्री रही है। उन्होंने श्री कृष्ण की भक्ति स्वामी (पति) के रूप में की है। उनके काव्य का विषय है -श्री कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम और भक्ति।

उन्होंने प्रेम के संजोग एवं वियोग के दोनों पक्षों की सुंदर अभिव्यक्ति की है उनका काव्य किसी बंधी -बंधाई परंपरा में नहीं आता।

उनके पदों की विशेषता उनकी तीव्र आत्मानुभूति में निहित है। मीरा के काव्य को प्रवृत्ति संस्थापक भी माना जाता है

'मीराबाई' का समय सामंतीकाल का चर्मोत्कर्ष था. ऐसे समय में रूढ़ियाँ, नारी स्वतंत्रता एवं जाति भेद के विरुद्ध मीराबाई ने बहुत साहस के साथ आवाज उठाई।

मीरा ज्ञान पक्ष के स्थान पर सहज भक्ति को अधिक महत्व देती थी।

मीरा की भाषा राजस्थानी और गुजराती मिश्रित ब्रज भाषा है। शैली की प्रमुख विशेषता सरल अभिव्यक्ति है उनकी रचनाएं विभिन्न राग रागनी के ऊपर आधारित है तथा उन्होंने अनेक प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है। उनके पदों में गीती एवं संगीतात्मकता का गुण विद्यमान है।

© JCERT not to be republished

प्रस्तुत पाठ के पहले पद में मीराबाई कहती हैं कि श्री कृष्ण के अतिरिक्त उनका कोई दूसरा आराध्य देव नहीं है। जिनके सिर पर मोर पंख का मुकुट सुशोभित हो रहा है अर्थात् श्रीकृष्ण ही मेरे पति हैं।मेरे प्राणो के आधार हैं।कृष्ण-भक्ति में उसने अपने कुल की मर्यादा भी भुला दी है। संतों के साथ बैठकर उसने लोकलाज खो दी है। आँसुओं से सींचकर उसने कृष्ण- प्रेम रूपी बेल बोयी है। अब इसमें आनंद के फल लगने लगे हैं। अर्थात् कृष्ण भक्ति में उन्हें आनंद आने लगा है। मैंने कृष्ण के प्रेम रूपी दूध को भक्ति रूपी मथानी में बड़े प्रेम से बिलोया है। मैंने दही से सार तत्व अर्थात् घी को निकाल लिया और छाछ रूपी सारहीन अंशों को छोड़ दिया। वे प्रभु के भक्त को देखकर बहुत प्रसन्न होती हैं और संसार के लोगों को मोह-माया में लिप्त देखकर रोती हैं। वे स्वयं को गिरधर की दासी बताती हैं और अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं।

पाठ का सार

दूसरे पद में प्रेम रस में डूबी हुई मीरा सभी रीति-रिवाजों और बंधनों से मुक्त होने और गिरिधर के स्नेह के कारण अमर होने की बात कर रही हैं।

मीरा पैरों में धुंघरू बाँधकर कृष्ण के सामने नाचती हैं। लोग इस हरकत पर उन्हें बावली कहते हैं तथा कुल के लोग कुलनाशिनी कहते हैं। राणा ने उन्हें मारने के लिए विष का प्याला भेजा जिसे उन्होंने हँसते हुए पी लिया। मीरा कहती हैं कि उसके प्रभु कृष्ण सहज भक्ति से भक्तों को मिल जाते हैं।

© JCERT not to be republished

पद – १

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरों न कोई
जा के सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई
छाँड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहैं कोई?
संतन द्विग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोयी
अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी
अब त बेलि फैलि गयी, आणद-फल होयी
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियों, डारि दयी छोयी
भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी
दासि मीरां लाल गिरधर तारो अब मोही

शब्दार्थ

गिरधर– पर्वत को धारण करने वाला यानी कृष्ण।

गोपाल– गाएँ पालने वाला, कृष्ण।

मोर मुकुट– मोर के पंखों का बना मुकुट।

सोई–वही।

जा के– जिसके।

छाँड़ि दयी– छोड़ दी।

कुल की कानि– परिवार की मर्यादा

करिहै– करेगा।

कहा– क्या।

ढिग– पास।

लोक-लाज– समाज की मर्यादा।

असुवन– आँसू।

सींचि– सींचकर।

मथनियाँ– मथानी।

विलायी– मथी।

दधि– दही।

घृत– घी।

काढ़ि लियो– निकाल लिया।

डारि दयी– डाल दी।

जगत– संसार।

तारो– उद्धार।

छोयी– छाछ।

सारहीन – अंश।

मोहि– मुझे।

प्रसंग– प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-1' में संकलित मीराबाई के पदों से लिया गया है। इस पद में उन्होंने भगवान कृष्ण को पति के रूप में माना है तथा अपने उद्धार की प्रार्थना की है।

व्याख्या– प्रस्तुत पद मे मीराबाई कहती हैं कि मेरे तो गिरधर गोपाल अर्थात् गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले कृष्ण ही सब कुछ हैं। दूसरे से मेरा कोई संबंध नहीं है। जिसके सिर पर मोर का मुकुट है, वही मेरा पति है। उनके लिए मैंने परिवार की मर्यादा भी छोड़ दी है। अब मेरा कोई क्या कर सकता है? अर्थात् मुझे किसी की परवाह नहीं है। मैं संतों के पास बैठकर ज्ञान प्राप्त करती हूँ और इस प्रकार लोक-लाज भी खो दी है। मैंने अपने आँसुओं के जल से सींच-सींचकर प्रेम की बेल बोई है। अब यह बेल फैल गई है और इस पर आनंद रूपी फल लगने लगे हैं। वे कहती हैं कि मैंने कृष्ण के प्रेम रूपी दूध को भक्ति रूपी मथानी में बड़े प्रेम से बिलोया है। मैंने दही से सार तत्व अर्थात् घी को निकाल लिया और छाछ रूपी सारहीन अंशों को छोड़ दिया। वे प्रभु के भक्त को देखकर बहुत प्रसन्न होती हैं और संसार के लोगों को मोह-माया में लिप्त देखकर रोती हैं। वे स्वयं को गिरधर की दासी बताती हैं और अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं। करती हैं हे गिरधरलाल ! मैं आपकी दासी हूं और आप ही मुझे संसार रूपी भवसागर से तारों मेरा; उद्धार करो।

विशेष–

प्रस्तुत पद में मीरा कृष्ण-प्रेम के लिए परिवार व समाज की परवाह नहीं करतीं।

मीरा की कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति व समर्पण भाव व्यक्त हुआ है।

© JCERT not to be republished

अनुप्रास अलंकार की छटा है।

'बैठि-बैठि', 'सींचि-सींचि' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

माधुर्य गुण है। गुजराती-राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का सुंदर रूप है।

'मोर-मुकुट', 'प्रेम-बेलि', 'आणद-फल' में रूपक अलंकार है।मीरा के समस्त पद में संगीतात्मकता व गेयता मौजूद है।

पद -२

पग घुँघरू बांधि मीरां नाची,

मैं तो मेरे नारायण सूं, आपहि हो गई साची

लोग कहँ, मीरा भई बावरी; न्यात कहैं कुल-नासी

विस का प्याला राणी भेज्या, पीवत मीरा हाँसी

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सहज मिले अविनासी।

शब्दार्थ

पग- पैर।

नारायण- ईश्वर।

आपहि- स्वयं ही।

साची- सच्ची।

भई- होना।

बावरी- पागल।

न्यात- परिवार के लोग, बिरादरी।

कुल-नासी- कुल का नाश करने वाली।

विस- जहर।

पीवत- पीती हुई।

हाँसी- हँस दी।

गिरधर- पर्वत उठाने वाले।

नागर- चतुर।

अविनासी- अमर।

प्रसंग- प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित प्रसिद्ध कृष्णभक्त कवयित्री मीराबाई के पदों से लिया गया है। इस पद में, उन्होंने कृष्ण प्रेम की अनन्यता व सांसारिक तानों का वर्णन किया है।

व्याख्या- मीराबाई कहती हैं कि वह पैरों में धुंघरू बाँधकर कृष्ण के समक्ष नाचने लगी है। मेरे इस आचरण के कारण लोगों ने मुझे पागल कहा और मेरे परिवार के लोगों ने कूल कलंकिनी अर्थात् (कुल का नाश करने वाली) कहा। मीरा विवाहिता है। और उनका इस तरह का आचरण उनके परिवार की मर्यादा के विपरीत है। कृष्ण के प्रति उनके अनन्य -प्रेम के कारण राणा ने उन्हें मारने के लिए विष का प्याला भेजा। उस प्याले को मीरा ने हँसते हुए पी लिया। मीरा कहती हैं कि उसके प्रभु गिरधर बहुत ही चतुर है। मुझे सहज ही उसके दर्शन सुलभ हो गए हैं।

विशेष—

इस पद में कृष्ण के प्रति मीरा का अटूट प्रेम और भक्ति व्यक्त हुआ है। उन्होंने अत्यंत

© JCERT not to be republished

सहज ढंग से साधारण भाषा में अपने हृदय की बात हो रखी है।

मीरा पर हुए अत्याचारों का आभास होता है।

अनुप्रास अलंकार की छटा है।संगीतात्मकता है। गुजराती राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है।भक्ति रस की अभिव्यक्ति हुई है।'बावरी' शब्द से बिंब उभरता है।

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1: मीरा कृष्ण की उपासना किस रूप में करती हैं? वह रूप कैसा है?

उत्तर- मीरा कृष्ण की उपासना पति के रूप में करती हैं। उसका रूप मन मोहने वाला है। वे पर्वत को धारण करने वाले हैं। उनके सिर पर मोरपंखी मुकुट है। इस रूप को अपना मानकर वे सारे संसार से विमुख हो गई हैं।

प्रश्न 2: भाव व शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी

अब त बेलि फैलि गई आणंद-फल होयी

(ख) दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी

दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी

उत्तर- (क) भाव-सौंदर्य- इस पद में भक्ति की चरम सीमा है। विरह के आँसुओं से मीरा ने कृष्ण-प्रेम की बेल बोयी है। अब यह बेल बड़ी हो गई है और आनंद-रूपी फल मिलने का समय आ गया है।

शिल्प-सौंदर्य-इस पद में मीरा की भक्ति और प्रेम परिदर्शित होता है। यहाँ सांगरूपक अलंकार है। राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है। संगीतात्मकता एवं गेयता है।

(ख) भाव-सौंदर्य- इन काव्य पंक्तियों में कवयित्री ने दूध की मथानी से भक्ति रूपी घी निकाल लिया तथा सांसारिक सुखों को छाछ के समान छोड़ दिया। इस प्रकार उन्होंने भक्ति की महिमा को व्यक्त किया है।

शिल्प-सौंदर्य-

अन्योक्ति अलंकार है।

राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है।

प्रतीकात्मकता है-'घी' भक्ति का तथा 'छाछ" सांसारिकता का प्रतीक है।

दधि, घृत आदि तत्सम शब्द हैं।

संगीतात्मकता एवं गेयता है।

प्रश्न 3: लोग मीरा को बावरी क्यों कहते हैं?

उत्तर- दीवानी मीरा कृष्ण भक्ति में अपनी सुध-बुध खो चुकी है। वह अपने पैरों में घुंगरू बांध कर साधुओं के बीच नाचती- गाती हैं; उन्हें संसार की किसी परंपरा, रीति-रिवाज, मर्यादा अथवा लोक-लाज का ध्यान नहीं है। जबकि एक राजकुमारी का इस प्रकार नाचना

© JCERT not to be republished

परंपराओं और मर्यादाओं के विरुद्ध समझा जाता है इसीलिए लोग उसे बावरी कहते हैं।

प्रश्न 4: विस का प्याला राणा भेज्या, पीवत मीरा हाँसी-इसमें क्या व्यंग्य छिपा है?

उत्तर- मीरा को मारने के लिए राणा ने विष का प्याला भेजा, जिसे मीरा ने हँसते-हँसते अमृत समझ कर पी लिया। कृष्ण-भक्ति के कारण उनका कुछ नहीं हुआ। इस पद में यह व्यंग्य है कि प्रभु-भक्ति करने वालों का विरोधी लोग कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

प्रश्न 5: मीरा जगत को देखकर रोती क्यों हैं?

उत्तर- मेरा जगत को देखकर इसलिए रोती है क्योंकि संसार ने कृष्ण के भक्ति को नहीं समझा और उसे तरह-तरह के कष्टदिए गए।संसार के सभी लोग मायाजाल में फंसकर ईश्वर (कृष्ण) से दूर हो गए हैं। लोग दुर्लभ मानव जन्म को ईश्वर भक्ति में नहीं लगाते। इसलिए, संसार की दुर्दशा और साररहीन जीवन-शैली को देखकर मीरा को रोना आता है।

बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. मीरा के पदों में किस भाव की प्रधानता है ?

(क) वीर

(ख) वात्सल्य

(ग) ओज

(घ) माधुर्य

उत्तर: (घ) माधुर्य

2. मीरा का जन्म किस सन् में हुआ था ?

(क) सन् 1495 में

(ख) सन् 1496 में

(ग) सन् 1497 में

(घ) सन् 1498 में

उत्तर- घ.1498

3. मीराबाई का जन्म कहां हुआ था?

उत्तर— कुड़की नामक ग्राम में

4. मीराबाई के गुरु कौन थे ?

(क) मलूक दास

(ख) कबीर दास

(ग) रैदास

(घ) सुखराम

उत्तर— ग) रैदास

5. मीराबाई को जहर का प्याला किसने भेजा था?

(क) सास ने

(ख) भाभी ने

© JCERT not to be republished

(ग) देवर ने

(घ) पति ने

उत्तर— ग) देवर ने

6— कुटुम्ब के लोगों के लिए मीरा ने किस शब्द का प्रयोग किया है?

क) न्यात

ख) कुल

घ) परिवार

उत्तर- क) न्यात

6. कवयित्री के प्रेम बेल पर कौन से फल लगे हैं ?

क) आम

ख) अमरूद

ग) आनंद

घ) अनार

उत्तर— ग) आनंद

7. मीरा के काव्य का मूल भाषा क्या है?

(क) राजस्थानी गुजराती मिश्रित ब्रजभाषा

(ख) राजस्थानी पंजाबी मिश्रित ब्रजभाषा

(ग) गुजराती पंजाबी मिश्रित ब्रजभाषा

(घ) अवधी मिश्रित ब्रजभाषा

उत्तर— क) राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा

8. मीरा किसकी भक्त थी ?

(क) राम की

(ख) श्री कृष्ण की

(ग) शिव की

(घ) दुर्गा की

उत्तर— ख) श्री कृष्ण की

9. मीरा ने प्रेम की बेल को किस जल से सींचा?

(क) नदी के जल से

(ख) सरोवर के जल से

(ग) वर्षा के जल से

(घ) आंसू के जल से

उत्तर— घ) आंसू के जल से

10. 'घृत' शब्द का सही अर्थ क्या है?

(क) घृणा,

(ख) गिरा हुआ

(ग) रंग

(घ) घी

उत्तर— (घ) घी

11 .राणा ने मीराबाई के लिए क्या भेजा था?

(क) दूध का प्याला

(ख) अमृत का प्याला

© JCERT not to be republished

(ग) विष का प्याला

(घ) शरबत का प्याला

उत्तर— (ग) विष का प्याला

12. सगे- संबंधी मीराबाई को क्या कहते थे?

(क) कवयित्री

(ख) भक्त

(ग) कुलनाशी

(घ)

उत्तर— (ग) कुलनाशी

13. मीरा के पति का नाम क्या था?

(क) भोजराज

(ख) राणा सांगा

(ग) शिवाजी

(घ) कुंवर जी

उत्तर— (क) भोजराज

© JCERT not to be republished